

वात्सल्य निधान (३७)

महरबान महरबान अमड़ि राधा महरबान ।

कृपा वात्सल्य जी निधान अमड़ि राधा महरबान ॥

अति उदार करुणा मई कुलमणी वृषभान

गौलोक जी साहिबि सभागी प्रणतनि पालण में सुजान ॥१॥

जंहि दे निहारिनि कृपा मां स्वामिनी सुख धाम

बिना जतन तंहि खे मिले प्यारिड़ो घनश्याम ॥२॥

प्रणतनि जी चिन्तामणी बृज गोपियुनि सिरताज

प्रेम मयी प्राणनाथ जी सन्त मणि सन्त समाज ॥३॥

जंहिजे हिकिड़े नाम जी महिमा अनन्त अपार

प्यारो कृष्ण चवे मूं मथां तिन कया उपकार ॥४॥

कृष्ण कृष्ण जी कुंजी जंहिजी चरण छांव आ

सची कथा जिनि जी बुधई मैगसि अमड़ि नाम आ ॥५॥